उपसंहार

भाषा और संवादीय संरचना किसी भी नाटक का प्राणतत्व माना गया है। नाट्य भाषा और संवादीय संरचना नाटककार की अपनी निजी विशेषता होती हैं और इसी कारण नाटककारोंने समय-समयपर अपने नाटकों में भाषागत और संवादीय संरचनात्मक विविध प्रयोग किये हैं।

सुरेंद्र वर्माने हिंदी नाटक साहित्य में ध्वनि,प्रकाश योजना आदि की दृष्टीसे भी भिन्न -भिन्न प्रयोग किये हैं। सुरेंद्र वर्माजी के नाटक रंगमंचपर भी खेले गऐ हैं।

साठोत्तरी हिंदी नाटक पारंपारिक रुढियों के प्रति विरोध करके नवीनता की तलाश में लगे हूये हैं। इतनाही नहीं मानवी समस्याओं को प्रस्तुत करने का विशेष प्रयत्न करते रहे हैं। इन नाटकों में समाज, सामाजिक परंपरा , स्त्री- पुरुष संबंध एवं अर्थ तथा संस्कृति विषयक विचारों में स्पष्ट रुपसे नवीनता के दर्शन हुये हैं। साठोत्तरी नाटकों में प्रेम और यौन संबंधी जिजिविषाओं का विशेष रुपसे उद्‌घाटन हुआ है।

सुरेंद्र वर्माजी ने भी कथावस्तुगत , शिल्पगत , मंचीय,मिथकीय,भाषागत असंगत आदि सभी पर गहराई से सोचकर अपने नाटक लिखे और रंगमंच पर खेले गऐ हैं।

नाटककारने यथार्थ की भाव भूमिपर आधारित आजके युवक वर्ग की स्वच्छंद यौन संबंध की भावना पर प्रकाश डाला है। 'एक दूनी एक' नाटक में नशापानपर आदमी और औरत के माध्यम से प्रकाश डालने का प्रयास किया है। आज समाज में नशापान करना सभ्यता का लक्षण माना जाता है। नाटककार ने खुलकर प्रकाश डालकर आधुनिक युगके बदलते तौर तरीके अपने नाटकों व्दारा नए प्रयोग से पेश करने का प्रयास किया है।

उपसंहार :-

"सुरेंद्र वर्मा के नाट्यसाहित्यमें चित्रित समस्याओं का अनुशीलन"- प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में नाटककार के दस नाटक एवं छह एकांकियों का विचार किया गया है।प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में कुछ समस्याएँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के धरातपर आधुनिक दृष्टि रखती हुई दिखाई देती है। महानगरीय जीवन से ग्रसित व्यक्ति की टूटनशीलता को यहाँपर देखा जा सकता है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के प्रमुख नाटककारमें सुरेंद्र वर्मा अपना विशेष स्थान रखते हैं। उनकी अधिकतर नाटकों की कथावस्तु पृष्ठभूमि केरूप में ऐतिहासिक होकर आधुनिक समाज जीवन का साक्षात्कार कराती है।

इनके 'सेतुबंध', 'आठवाँ सर्ग', 'नायक खलनायक विदूषक', 'गुप्तकालीन' ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर आधारित है। 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक सामंत कालीन इतिहास से संबधित होकर ऐतिहासिक नहीं जान पडता। इन सबके पीछे एक ही उद्देश्य हैं , कि आज के मानव जीवन को ही अभि व्यक्त करना। इन नाटकों में प्रमुखता से वैवाहिक समस्या , स्त्री-पुरूष काम संबधी समस्या, 'नियोग - पध्दती' की नयी व्याख्या , कलाकार की बेबसी , विवशता, साहित्यकार की प्रतिबध्दता, साहित्य में श्लीलता - अश्लीलता का प्रश्न आदि समस्याओं कों नाटककारने आधुनिक जीवन संदर्भ में चित्रीत किया हैं।

आज के परिवर्तित जीवन को, मूल्योंको और असंगती को उन्होने यथार्थ के नग्न रूपमें किया हैं। महानगरीय जीवन का साक्षात्कार करने हेतु नाटककारने अपने नाट्यसाहित्य को मर्मस्पर्शी बनाया है। 'द्रौपदी', 'एक दूनी एक' नाटक मुख्यतया

स्वच्छंदता, युवा पीढी का पाश्चात्य सभ्यतामें रंगना, भौतिक सुख -सुविधाओं के पीछे भागता संत्रस्त व्यक्ति, आदी बातों को आज के जीवन के साथ जोड दिया है।

अपने नाट्यसाहित्य व्दारा नाटककारने आधुनिक मानव जीवन में सेक्स से संबंधित नए दृष्टीकोन को उद्घाटीत किया है। उनके सभी नाटकों का अभिनव सूत्र सेक्स चित्रण ही रहा है।

युवा पीढ़ी में सेक्स को लेकर बहुत बडी जिज्ञासा, गलत फहमियाँ पन पने लगी है , इस कारण आज समाज में खुलकर सेक्स के दर्शन होने की वजह से नाटककारने अपने नाटयसाहित्य में बडी मात्रामें इस विषय का चित्रण किया है।

'छोटे सैयद बडे सैयद' नाटक उत्तर मुगलकालीन ऐतिहासिक पृष्टभूमिपर लिखा गया। राजनीतिक उथलपुथल और भ्रष्टाचार का जीता जागता नमुना प्रस्तुत करता है। पूरे नाटक में उत्तर मुगल- कालीन कठपुतली बादशाहों की विलासिता, दयनीय स्थिती तथा अब्दुल्ला खाँ और हुसेन अलीकी कुटिल राजनितीको यथार्थ रूप में चित्रित किया गया हैं। इस नाटक के माध्यम से आधुनिक राजनिती का काला चिठ्ठा प्रतिबिंबित किया हैं।

सुरेंद्र वर्माजीने भारत के अतित की ओर आकृष्ट होकर कालिदास मिथक के व्दारा आज के साहित्यकार की प्रतिबध्दता पर प्रकाश डाला हैं। नाटक के नामकरण द्रौपदी के माध्यमसे सुरेखा की महाभारतकालीन द्रौपदीके संदर्भ में दिखाकर एकही पुरूष (मनमोहन) के नकाबो में विभाजित रूपों के सार्थ लिडने झगडने और टूटनेवाली आधुनिक द्रौपदी को चित्रित किया है।

'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' नाटक में प्राचीन 'नियोग-पध्दती' के व्दारा नपुंसक पुरूष के साथ विवाह होनेपर कुलीन स्त्री की दबी हुई यौन-इच्छा कैसे विद्रोह करके फूट पडती हैं। इसका चित्रण किया है और एक रात्रि में ही उपपति के रूप में परपुरूष से काम संबंध स्थापित होने पर उसके जीवन मूल्य कैसे बदलते हैं, यह नाटककारने दिखाया हैं। आजकी नारी मातृत्व को गौण और काम्सुख को प्रमुख मानती है।

सुरेंद्र वर्मा के नाटकोके सभी पात्र आजके युगबोध की नई वाणी देने का प्रयत्न करते हैं। इस दृष्टीसे कालिदास , ओक्काक,शीलवती पात्र विशेष उल्लेखनीय जान पडते हैं। ओक्काक की नपुसंकता, शीलवती की अदम्य काममुख लालसा, कालिदास का अपमान, मनमोहन का चार नकाबवाला रूप, आधुनिक 'द्रौपदी' के रूपमें सुरेखा, आदमी और औरत का असंगत जीवन उन पात्रों का खंडित व्यक्तित्व एवं मानसिक दशाओं का यथार्थ चित्रण है। नाटककारने लघु मानव के अंकन में कंपिजल , प्रियंवदा, अनसूया, महत्तरिका, कीर्तिभट्ट आदि को चित्रित करने में अपनी दिलचस्पी दिखाई हैं।

खंडित व्यक्तित्व में ओक्काक , शीलवती, प्रवरसेन,प्रभावती, आर्य पितांबर, कालिदास, प्रियंगु मंजरी, अब्दुल्ला खाँ -हुसैन अली, सुरेखा-मनमोहन, आदमी-औरत आदि के मनोविज्ञान को परखा जा सकता है।

यहँ पर मानव की विविधता,विद्रूपता, विचित्रता का यथार्थ चित्रण दिखाई देता है। सुरेंद्र वर्मा के एकांकी सग्रह में छह लघु एकांकियाँ सम्मिलित है ,जो आधुनिक युग की समस्याओं को प्रस्तुत करती है।

कामप्रवृत्ति मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृत्ती है। लेकिन आज उसका स्वरूप-गिरता-बिगडता चला जा रहा है। इस काम समस्या से समाज को अधिक धोखा रहा है। युवा पीढ़ी भी इसी के पीछे अपने नैतिक मूल्य खोती जा रही है।

आज भारतीय समाज जीवन पर पाश्चात्य सभ्यता का फैशन जोर पकडकर भारतीय संस्कृती के -हास का कारण बनता जा रहा है। आज का व्यक्ति प्रेम में असफल होने पर अकेला, टूटकर बिखरता जा रहा है। उसमें स्वार्थ की भावना पनपने लगी है। 'शकुंतला की अंगूठी' नाटक के व्दारा वर्तमान समाज-जीवन का चित्रण दिखाई देता है। आज दफ्तर में काम करनेवाली नारी नैतिक लोप में अग्रेसर होती दिखाई देती है।

अवैध संतान,अनमेल विवाह को नाटककारने नए दृष्टीकोनसे प्रस्तुत किया है। परिवार विघटन, विच्छेदन की समस्या, बढती

जनसंख्या, स्त्री -पुरुष के बदलते संबंधों के कारण नए रोगों की उत्पत्ती की नई - नई समस्या दिखाई देती है।

सामाजिक समस्याओं में कुवाँरी माता की समस्या विवाह संस्था का गिरते जाना, मनोरुग्ण की समस्या भ्रष्टाचार, रिश्वत का बोलबाला, आदि को प्रभावी ढंग से नाटककारने प्रस्तुत किया है। साठोत्तरी हिंदी नाटकों में जीवन से साक्षात्कार कराने का विराट अनुभव दिखाई देता है। जीवन यथार्थ को गहरे धरातल पर प्रस्तुत करता हुआ, मानव अस्मिता के साथ मूल्य संकट के घेरों से जूझ रहा हैं।

समकालीन हिंदी नाटकों में युगानुकूल पारिवारीक अंतर्विरोध तनाव, कलह और यातना के विषमचित्र अंकित हुए है। सुरेंद्र वर्माने 'द्रौपदी' में पौराणिक प्रतीक के ब्याज से वर्तमान वैयक्तिक एवं पारिवारिक असद भावना को उजागर किया है। इस नाटक के जरिए नाटककारने पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित और आक्रांत उच्चवर्गीय आधुनिक समाज के खोखले पन को भी चित्रित किया है।

सुरेंद्र वर्मा की नाट्यरचना 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य के पहली किरण तक' की कथावस्तु का परिवेश पौराणिक है। लेकिन संपूर्ण आवेष्टन को भेदकर जिस मूल चेतना - बिंदु पर नाटक की संवेदना केंद्रित हुई है, वह हैं स्त्री - पुरूष की कालातीत यौन समस्या और उसीके अनुसार एक स्त्री और पुंसत्वहीन पुरूष के मानसिक व्दंव्द को बडी ट्रैजिक तीव्रता और प्रभावशाली ढंगसे प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत नाटक की नायिक शीलवती को नपुंसक राजा ओक्काक एवं अमात्य परिषद के मतानुसार नियोग-पध्दती के लिए उपपति चुनने के लिए सहमति देते है। राज्य के उत्तराधिकारी की मांग को शीलवती अपनी कुलमर्यादा को ध्यान में रखकर धर्मनटी बन जाती है। वह उपपति के रूपमें आर्यप्रतोष जो उसका बाल-सखा प्रेमी था, उसे चुनति हैं। किसी अन्य पुरूष का वह चुनाव अपने नपुंसक पति की इच्छि पूर्ति के लिये नही वरन स्वंय अपने लिए करती है। यह विद्रोह नारीके विद्रोह का संकेत हैं, जहाँ वह अपने को साधन के रूप में उपयोग होने से बचाते हुए, पुरूष व्दारा दी गई व्यवस्था का स्वयं के लिये उपयोग कर झटका देती है।

सुरेंद्र वर्माजी के कुल नाटकों का अध्ययन करने पर पता चलता हैं कि आज का समाज तेजीसे पूराने मूल्य छोडकर नए मूल्यों की तलाश में भटकता जा रहा है। इन नाटकों पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपसे चरित्र की पहचान, समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उच्च वर्ग का वैभवशाली परंतु संस्कार हीन चारित्र्य उनके नाटकों में व्यक्त हुआ है। मानवीय संबंधों की अर्थहीनता तनाव, अधुरे पन और क्रूरता को कथ्य बनानेवाली नाट्य रचनाओं में है द्रौपदी, सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, द्रौपदी के नाटकीय परिदृश्य में पौराणिक प्रतीक के ब्याज से नग्न यथार्थ को ऊजागर करते हुए कामवासना की समस्या को व्यक्त किया गया है।

'सूर्य की अंतिम किरणसे सूर्य की पहली किरणतक' नाटक में जीवन - मूल्यों का बदलाव दर्शनीय हैं। इसमें मातृत्व के, साथ सतीत्व जैसे मूल्यभी संकटमें पडे दिखलाई देते है। इस नाटक के अंत में सुरेंद्र वर्माने बोल्ड होकर नारी के व्यक्तित्व की पूर्णता के लिए एकसे अधिक पुरुषों की आवश्यकता पर जोर दिया हैं।

'छोटे सैयद बडे सैयद' नाटक के व्दारा इतिहास - पुराण की कथा या घटनाव्दारा मात्र अतित को उभारने का प्रयत्न किया है। इनमें संदर्भो या मिथकों के सार्थक उपयोग वर्तमान युग की विसंगति को बेनकाब किया है। इसमे निहित इतिहास वर्तमान से जुडा है। सुरेंद्र वर्माने मुगलकालीन चरित्र को नये संदर्भ में रखकर आधुनिक राजनैतिक त्रासदी और उसकी विडंबना को उदघाटित किया है।

सुरेंद्र वर्माजीने 'द्रौपदी' नाटक के जरिए विसंस्कृत हो रहे व्यक्ति जीवन की यांत्रिक विद्रूपताओंको अवतरण चिन्ह दिया है। इसमें केवल पुरुष कोही शनिवार रात्रियों की खोज है। वह प्रत्येक सप्ताहांत मे किसी नए शरीर से अपना स्वाद बदलता है। 'शनिवार के दो बजे', द्रौपदी में महानगरी जीवन की ऊबन, ऊबकाई का विकल्प यह भी बन आया है कि पति -पत्नी बाहर किसी

तीसरे व्यक्ति के साथ किसी मित्र के कमरे में जायका बदलते फिरे। 'द्रौपदी' में अस्मिता की खोज मनमोहन पाता है , वह है हररोज एक नया जिस्म,सिगरेट का पैकेट , नोट, बैंक बैलेंस और कार का लाइसेंस यही उसका व्यक्तिगत मात्र है। इस नाटक में एकही व्यक्ति मनमोहन को चार नकाबोमे विभाजित कर उसके व्यक्तित्व को महानगरीय जीवन से प्रभावित होकर दिखाया है। मनमोहन अपने मौलिक धरातल को भूल चूका है।

'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में भीतर और बाहर के पुरूष के संदर्भ में नारी की मुलप्रतिबध्दता को प्रश्नित किया गया है। साथ ऐसे प्रश्न भी उठाए है कि भीतर और बाहर का पुरुष कौन हैं ? देह सुख की प्राथमिकता में मातृत्व का उत्पादन क्या सचमुच गौण है ? ऐसे ही प्रश्न नाटककारने नींद क्यों रातभर नहीं आती, आठवाँ सर्ग, शनिवार के दो बजे, मरणोपरांत, सेतुबंध के संदर्भ मे बार -बार उठाए है। नाटककार रचनाओं से बाहर अपने रंग - साक्षात्कारों में भी इन प्रश्नों के उत्तर संभवत: नहीं पा सका है. इसी कारण वह उन्हें दोहराने के धरातल पर खडा है।

सुरेंद्र वर्माने अपने दो लघु एकांकियों में पीढी विच्छेद की मानवीय त्रासदी को अपेक्षित गंभीरता से उठाया है। 'वे नाकसे बोलते हैं' में मौलिक चुनाव की छूट के बाद भी निर्वाह न होने की दुर्नियति मे हुए विच्छेद की यंत्रणा है। ऐसी स्त्री एक ओर अपनी माँ से जुडी है और दुसरी और अपनी बेटी से। दोनों में वह घिरी है, पर नितांत निपट अकेली है। अपने अस्तित्व को अर्थ देने के लिए वह बराबर प्रयत्न करती है, परंतु और अधिक खालीपन उसमें समा जाता है।

'हरी घास पर घंटे भर' में भी तीन पीढ़ीयाँ उपस्थित है। एक दूसरे के सामने साथ - साथ धूप सेंकती हुई, परंतु सर्वथा ठंडी और कटी हुई। संवेदना की हरी घास, प्यास की ऊष्म धूप उन्हें एक समान नहीं छूपाती हैं। वे खंडित संवादो की भाँति बिखरने लगते हैं।

'शनिवार के दो बजे' की श्रृंखला में 'नींद क्यो रात भर नहीं आती' एक महत्वपूर्ण कडी है। यहाँ पति - पत्नीमें विच्छेद की वियुक्ति की यातना अस्तित्वपर फनताने खडी रहती है।

'मरणोपरांत' में एक स्त्री एक ही समय में मौलिक -अमौलिक पुरुष से जुडकर अरचनात्मक और अंतमें दुर्घटना में अपने प्राण गँवा देती है। लेकिन उसकी पर्ससे उसके पति के हाथ बाहरी पुरुष का पता मिल जाता है। ऐसी स्थितिमें पति घृणा के तनाव में टूटता है , तो दुसरी और बाहर का व्यक्ति अपने ही अपराध -बोधसे विकलांग बन जाता है।इस तरह स्त्री का अनेक पुरुषों के साथ अनैतिक संबंध समाज - व्यवस्थामें विष घोलने का काम करता है।

'सेतुबंध' में एक आकस्मिक संयोग दिखाई देता है , जो बाहर और भीतर के पुरुष में भूमिका परिवर्तन उपस्थित करता है। परपुरुष पति बन जाता है और पति परपुरुष बन जाता है। 'हिंडोल इंगूर' मे सुरेंद्र वर्माजीने पूरे परिवार का अपने वर्तमान से विच्छेद और अन्य कार्य की प्रतीक्षा में भटकाव उभारा है। यह भटकाव हमें अकेला - घुटन के बीच ले जा रहा हैं।

'नायक खलनायक विदूषक' में मानव जीवन की भयंकरतम दुर्नियति अतीव प्रखरता से उभरकर सामने आयी है। स्वतंत्र और इच्छित चुनाव के सभी वैध मार्ग वर्जित हो रहे है , तथा हम संपूर्ण विरोध ,अस्वीकार के बावजूद भी निरंतर चुने जाने के लिए दंडित हो रहे हैं। प्रस्तुत नाटक के व्दारा समकालीन व्यक्ति की विवशताओंपर तीव्र प्रहार हैं।

'एक दूनी एक' नाटकके व्दारा महानगरीय जीवन की आपाधापी जिंदगी में शामील व्यक्ति का खंड-खंड में विभक्त होना, विवाह संस्था के मूल्य परिवर्तन को युवावर्ग की बदनाम पीढी के चित्रण व्दारा तथा उनसे पहले वाली पीढी का अनुकरण कर समाज व्यवस्था में कई पारिवारिक समस्या, सामाजिक समसयाओं का नया रुप सुरेंद्र वर्माजीने अपने नाट्य साहित्यद्वारा पेश किया हैं।

पश्चात्य संस्कृति का अनुकरण युवक-युवतियोंमें अधिक बढ रहा है। स्वच्छंदी जीवन, कामकाजीनारी के जीवन मूल्यों में गिरावट, व्यक्ति स्वातंत्र्य में बदलाव जीवन में कई समस्याओं को जन्म देते जा रहे हैं।

इसप्रकार से सुरेंद्र वर्माजी मूलत: अपने नाट्यसाहित्य के माध्यमसे समस्यामूलक नाटककारके रुप में जाने जाते रहेंगे।